चयन तत्व के परिप्रेक्ष्य में 'इस रूट की सभी लाइनें व्यस्त हैं' की कविताएँ (चुनिंदा कविताओं के संदर्भ में)

डॉ. रेवनसिद्ध काशिनाथ चव्हाण

हिंदी विभाग

फर्ग्युसन महाविद्यालय (स्वायत्त) पुणे

दूरभाष : 9922869806

ई–मेल– revanchavan1989@gmail.com

शोध सार :

साहित्य (शाब्दिक कला) के अध्ययन हेतु शैलीवैज्ञानिक अध्ययन प्रणाली ने आज अपना महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है । किसी भी साहित्यिक रचना या विधा में निहित भाषिक इकाइयों का यह पद्धति अपने प्रतिमानों के आधार पर मूल्यांकन कर रचना के मर्म को उद्घाटित करती है । रचयिता के कलात्मकता को वस्तुनिष्ठता से वैज्ञानिकता, कृति को स्वनिष्ठ एवं पूर्ण इकाई मानकर निष्पक्षता से शैलीविज्ञान अध्ययन करता है । इसकी दृष्टि भाषावादी है इसलिए साहित्य को शाब्दिक कला के रूप में अपनाते हुए साहित्य का अध्ययन करता है । रचनाकार द्वारा अपनी रचना में भाषिक इकाईयों का कलात्मक तरीके से जो प्रयोग होता है उसकी तह तक पहुँचकर रचनात्मक कलासौंदर्य, भावसौंदर्य को उजागर करता है । शैलीविज्ञान भाषा के साक्ष्य पर कृति की 'साहित्यिकता' को महत्व देता है न कि कवि का परिवेश, कवि पर पड़े रचनात्मक प्रभाव को । शैलीविज्ञान के पास किसी भी रचना या साहित्यकृति की परख के लिए – चयन, विचलन एवं समानांतरता जैसे प्रतिमान हैं । इन्हीं प्रतिमानों के माध्यम से रचना का मूल्याकंन करना शैलीविज्ञान का साध्य है और साधन के रूप में – ध्वनि, शब्द, पद, वाक्य, अर्थ आदि ।

सुशांत सुप्रिय समकालीन कविता के एक सशक्त हस्ताक्षर हैं । अपनी कविता का उन्होंने स्वंय विकास किया है । उनके काव्य–चिंतन के केंद्र में आज का मानव रहा है । उनकी कविताओं में जनवादी चेतना और जनसामान्य की वेदना अनेक रूपों में शब्दबद्ध हुई है । कवि ने अपने सर्जनात्मक प्रसाद में ऐसे मानव–जीवन को स्थान दिया है जो विभिन्न स्थितियों से, राजनीतिक छल–प्रपंच से, मूल्यविघटन से, वैश्वीकरण की थपेड़ों से, प्रकृति के शोषण से आहत है । कवि ने मानव–जीवन से संबंधित रेशे–रेशे को 'इस रूट की सभी लाइनें व्यस्त हैं' नामक काव्यसंग्रह में प्रस्तुत किया है । इसी संग्रह की कविताएँ मनुष्यता को बचाये रखने के लिए आवाहन करती हैं ।

बीज शब्द– शाब्दिक कला, कलात्मकता, वस्तुनिष्ठता, वैज्ञानिकता, साहित्यिकता, प्रतिमान, जनवादी चेतना, सर्जनात्मक प्रासाद, काव्य–चिंतन आदि ।

सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक परिवेश में छिपे मारीच तंत्र को 'इस रूट की सभी लाइनें व्यस्त हैं' संग्रह कविताएँ निरावृत्त करती है । समकालीन मानव जीवन में उत्पन्न तमाम तरह की विड़ंबनाओं की सशक्त अभिव्यक्ति करने वाला यह कवि का दूसरा काव्यसंग्रह है । जैसे – "मित्रो/आम आदमी की असुविधा के यज्ञ में/जहाँ मुट्ठी भर लोगों की सुविधा का/ पढ़ा जाए मंत्र/वह कैसा गणतंत्र"[1] आम आदमी के जीवन की त्रासदी को अभिव्यक्त करती ये पंक्तियाँ संवेदनशील पाठक को

झकझोर देती है । इन्हीं विशेषताओं के कारण इस संग्रह की कुछ चुनिंदा कविताओं को शैलीविज्ञान के चयन प्रतिमान के माध्यम से परखा जाएगा । शैलीविज्ञान एक स्वतंत्र ज्ञानानुशासन है जो भाषा और साहित्य दोनों को साथ लेकर चलता है । शैलीविज्ञान वस्तुपरक चिंतन, भाषावादी दष्टिकोण और वैज्ञानिक तकनीक से साहित्य को परखता है । शैलीविज्ञान क्या है यह स्प्ष्ट करते हुए प्रसिद्ध शैलीविद 'शीतांशु' लिखते हैं– "शैलीविज्ञान की सामान्य परिभाषा इसे 'शैली के अध्ययन के विज्ञान' के रूप में परिभाषित करने की है और इसकी विशिष्ट परिभाषा इसे एक ऐसी भाषा–माध्यमिक, वस्तुनिष्ठ आलोचना प्रणाली के रूप में उपस्थित करने की है जिसमें 'पाठ के कथ्य–मर्म और उसके सौंदर्य' का उन्मीलन संभव हो पाता है ।"[2] अर्थात शैलीविज्ञान रचना की भाषा का वस्तुनिष्ठ विश्लेषण कर रचना के मर्म को पाठकों के सामने प्रकट करता है । चयन शैलीविज्ञान का प्रमुख एवं महत्वपूर्ण प्रतिमान रहा है । वैसे देखा जाए तो चयन का अर्थ है– 'चुनना या चुनाव करना ।' चयन को मूलाधार मानते हुए भारतीय तथा पाश्चात्य जगत ने शैलीविज्ञान को परिभाषित किया है । कवि भाषा के रत्नाकर से अपनी काव्यसर्जना के अनुकूल भाषिक रत्न चुनता है । आशय यह है कि अपने विशिष्ट अनुभव जगत की अभिव्यक्ति सार्थक हो इसलिए उपलब्ध भाषिक विकल्पों में से किसी एक का चयन रचयिता करता है । इसे ही चयन कहा जाता है । चयन क्या है यह स्पष्ट करते हुए डॉ. उषा सिंहल ने लिखा है – "चयन शब्द का अर्थ है चुनना अर्थात कई एककों, वस्तुओं आदि में से किसी एक का चुनाव करना । शैलीविज्ञान के संदर्भ में इस शब्द का अर्थ है– विशेष अनुभूति की अभिव्यक्ति के लिए भाषा द्वारा प्रयुक्त एकाधिक विकल्पों में से किसी एक का चुनाव।"[3] चयन प्रतिमान के परिप्रेक्ष्य में किसी भी कृति में प्रयुक्त ध्वनि, शब्द, पद, वाक्य, अर्थ आदि का विश्लेषण किया जाता है । यहाँ पर 'इस रूट की सभी लाइनें व्यस्त हैं' काव्यसंग्रह में से कुछ कविताओं का चयन तत्व के परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण निम्नलिखित प्रकार से हैं–

शब्द चयन:

कोई भी रचनाकार हो, अपनी रचनात्मक मार्मिकता को सरस और प्रभावी बनाने के लिए शब्दों का सटीक चयन करता है । भोलानाथ तिवारी ने शब्द चयन के कई आधार सोदाहरण बताये हैं । रचयिता सर्तकता के साथ शब्दों का चयन करता है । शब्द चयन की प्रक्रिया कई रूपों में होती है ।

जैसे– "हमें बचाओ, हम त्रस्त हैं–/डरे हुए लोग छटपटा रहे हैं/किंतु दूसरी ओर केवल एक/रेकॉर्डेड आवाज उपलब्ध है–/'इस रूट की सभी लाइनें व्यस्त हैं'।"[4] इस उदाहरण में युगीन प्रवृत्ति के अनुरूप शब्दों का चयन हुआ है । संवेदनाहीन होते जा रहे मानव समाज की सच्ची तस्वीर 'रेकार्डेड आवाज, रूट की सभी लाइनें' इन शब्दों द्वारा प्रस्तुत की है । ये शब्द आज के अकर्मण्यता, असंवेदनशीलता के तरफ संकेत करते हैं । मानो यंत्रों की भाँति मनुष्य भी अपनी संवेदनओं को खोकर यंत्रवत बना हुआ है ।

"आँसू खून और पसीने से सने/वे समुदाय माँगते हैं/अपने अंधेरे समय से/ अपने हिस्से की धूप/अपने हिस्से की हवा।"[5] समाज में बढ़ती वर्गगत विषमता की दरार को दर्शाने हेतु कवि द्वारा 'अंधेरे समय' इस शब्द का प्रसंगानुकूल चयन हुआ है । समय की सही स्थिति इससे द्योतित हो रही है ।

"सबसे बदहाल, सबसे गरीब/ सबसे अनपढ़, सबसे अधिक/लुटे–पिटे करोड़ो लोगों वाले/कुछ समुदाय हुआ करते हैं । जिन्हें भूखे, नंगे रखने की साजिश में/लगी रहती है एक पूरी व्यवस्था।"[6] 'पूरी व्यवस्था' यह जो शब्दबंध है वह व्यवस्था के अमानवीय रूपों की ओर ध्यान आकर्षित करता है । इस काव्यांश में अर्थ की दूरगामी व्यंजनार्थ हेतु शब्द चयन हुआ है ।

शब्द चयन अंत्यत व्यापक स्तर पर होता है । शब्द चयन व्याकरणिक कोटियों– संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण आदि में भी पाया जाता है । जैसे–

संज्ञा चयन– "वे समुदाय/जिनमें जन्म लेते हैं बाबासाहेब अंबेड़कर/महात्मा फुले और असंख्य महापुरुष/किंतु फिर भी जिनमें जन्म लेने वाले/करोड़ो लोग अभिशप्त होते हैं/अपने के खैरलाँजी या मिर्चपुर की बलि चढ़ जाने को ।"[7] इस काव्यांश में नामवाचक संज्ञाओं का सटीक चयन किया है । बाबासाहेब, महात्मा फुले जी ने सामाजिक न्याय के लिए अपना जीवन समर्पित किया था । आज के समय पर हम दृष्टिपात करें तो यह देखते हैं कि देश में संवैधानिक प्रावधान होते हुए भी खैरलाँजी, मिर्चपुर कांड सरीखे संस्करण देश भर में घटीत होते हैं ।

सर्वनाम चयन– "कुछ समुदाय हुआ करते हैं/जिनमें जब भी कोई बोलता है/'हक' से मिलता–जुलता कोई शब्द/उसकी जुबान काट ली जाती है ।"[8] इसी काव्यांश में अनिश्चयवाचक सर्वनाम 'कोई– कुछ' का सार्थक प्रयोजन हुआ है । अन्याय– अत्याचार के खिलाफ सभी आवाज नहीं उठाते हैं पर जो भी आवाज उठाने की कोशिश करता है उसकी जुबान साम–दाम–दंड–भेद अपनाते हुए बंद की जाती है इसी ओर यह सर्वनाम चयन पाठकों का ध्यान आकर्षित करता है ।

क्रिया चयन– "वे समुदाय/ जिन से छीन लिए जाते हैं/उनके जंगल, उनकी नदियाँ, उनके पहाड़ जिनके अधिकारों को रौंदता चला जाता है/कुल–शील–वर्ण के ठेकेदारों का तेजाबी आर्तनाद।"[9] यहाँ पर 'दबाता' 'मिटाता' जैसे क्रियावाचक शब्दों की जगह 'रौंदता' का प्रयोग प्रभावी हुआ है । इसके कारण यह ज्ञात हो जाता है कि शोषण का पहिया कितना प्रभावशाली है । इस उदाहरण में 'रौंदता' क्रिया का कवि ने बड़ी कलात्मकता के साथ प्रयोग किया है ।

विशेषण चयन– संज्ञा एवं सर्वनाम की विविध भावभंगिमाओं को उद्भासित करने के लिए काव्य में विशेषणों का चयन सर्वाधिक होता है । कवि ने भी कई विशेषणों का चयन किया है । एक उदाहरण दृष्टव्य है– "सुनो द्रोणाचार्यों/हालाँकि तुम विजेता हो अभी/सभी मठों पर तैनात हैं/तुम्हारे खूँखार भेडिए।"[10] संज्ञासाधित विशेषण 'खूँखार भेडिए' की योजना इस उदाहरण में हुई है । यह विशेषण राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक तंत्र के क्रूर चेहरे को नोच कर सबके सामने उजागर करता है ।

वाक्य चयन– अर्थ की दृष्टि से भाषा की पूर्ण एवं सार्थक इकाई वाक्य होती है । किसी भी रचयिता के पास वाक्य स्तर पर चयन के अत्याधिक अवसर होते हैं । इसी तथ्य के अनुसार रचनाकार अपनी रचना में एक ओर व्याकरण निर्दिष्ट वाक्य व्यवस्था का चयन करते हैं तो दूसरी ओर कई संभाव्य विकल्पों में से वाक्य चयन करते हैं । सुशांत जी के काव्य में वाक्य चयन विविध स्तरों पर हुआ है । जैसे–

"हमें बचाओ, हम त्रस्त हैं ।"[11] आज के मानव की त्रासद स्थिति को बया करने प्रित्यर्थ कवि ने यहाँ रचना के आधार पर वाक्य भेद में से सरल वाक्य का प्रयोग किया है ।

"राष्ट्रपति भवन के प्रांगण/संसद भवन के गलियारे और/मंत्रालयों की खिड़कियों से/कहाँ दिखता है सारा देश।"[12] रचना के आधार पर वाक्य भेद में से यह संयुक्त वाक्य है । सत्ता के सर्वोच्च स्थान से देश के कई प्रदेशों की अनदेखी की तरफ यह वाक्य चयन संकेत है ।

"न कोई खिडकी, न दरवाजा, न रोशनदान है/काल–कोठरी सा भयावह वर्तमान हैं ।"[13] अर्थ के आधार पर वाक्य भेद में से निषेधवाचक वाक्य का चयन इस उदाहरण में हुआ है । निषेधवाचक वाक्य की सर्जना के लिए कवि ने 'न' का प्रयोग प्रभावी रूप से किया है । जन– जीवन के विसंगतिपूर्ण स्थिति को यह वाक्य चयन प्रकट करता है ।

अर्थ चयन:

साहित्य की भाषा में अर्थ स्तरीय चयन की भी संभावना होती है । भावों की अभिव्यक्ति के लिए मुख्य तीन प्रचलित पद्धतियाँ – अभिधा, लक्षणा और व्यंजना के आधार पर ही रचनाकार अर्थ चयन को वरीयता देते हैं । अर्थ चयन के कुछ उदाहरण दृष्टव्य हैं –

"वे समुदाय/जिनमें जन्म लेते हैं बाबा साहेब आंबेड़कर/महात्मा फुले और असंख्य महापुरुष/किंतु फिर भी जिनमें जन्म लेने वाले/करोडों लोग अभिशप्त होते हैं/अपने समय के खैरलाँजी या मिर्चपुर की/बलि चढ़ जाने को।"[14] बड़ी ही सहजता, सरलता से कवि बाबा साहेब, फुलेजी और अन्य महापुरुषों के कार्य की याद दिलायी है, जिसकी प्रतीति बिना किसी संकेतग्रह में बाधा पहुँचे हो जाती है । यहाँ पर अभिधार्थ अर्थ चयन हुआ है ।

"सुनों द्रोणाचार्यों/हालाँकि तुम विजेता हो अभी/सभी मठों पर तैनात हैं/तुम्हारे खूँखार भेडिए ।"[15] इस काव्यांश में 'द्रोणाचार्य' का प्रयोजन के आधार पर अर्थ प्रकट होता है । आज के द्रोणाचार्य नुमा आचरण पर यह प्रहार है । यह लक्षणार्थ अर्थ चयन का उदाहरण है ।

निष्कर्ष:

उपरोक्त शैलीवैज्ञानिक विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि किसी भी रचना के मूल्यांकन के लिए शैलीविज्ञान रचना के निष्पक्ष अध्ययन के लिए एक उत्कृष्ट पद्धति है । जिसके प्रतिमानों के आधार पर रचनात्मक मर्म को पाठकों तक पहुँचाया जा सकता है । चयन शैलीविज्ञान का प्रमुख एंव महत्वपूर्ण प्रतिमान है । चयन तत्व के आधार पर सुशांत सुप्रिय के 'इस रूट की सभी लाइनें व्यस्त हैं' की चुनिंदा कविताओं को परखने के पश्चात यह तथ्य स्पष्ट होता है कि कवि ने अपनी कविताओं में भावाभिव्यक्ति की प्रभावशीलता के लिए भाषिक इकाईयों का सटीक एंव संदंर्भानुसार चयन किया है । जिसके कारण कवि की काव्य शैली का पथ निर्धारित हो जाता है । कवि ने शब्द संपदा का यथोचित चयन करते हुए अपनी कविता को अर्थपूर्ण बनाते हुए भावपूर्ण भी बनाया है ।

संदर्भसंकेत सूची:

1.सुशांत सुप्रिय, इस रूट की सभी लाइनें व्यस्त हैं, अंतिका प्रकाशन गाजियाबाद, पहला संस्करण 2015, पृ 63
2.शशिभूषण पाण्डेय 'शीतांशु', शैलीविज्ञान: प्रकार प्रतिमान और, हरियाणा साहित्य अकादमी चंडीगढ़, प्रथम संस्करण, पृ 1
3.डॉ. उषा सिंहल, शैलीविज्ञान और नाटक, पीतांबर पब्लिशिंग कंपनी दिल्ली, प्रथम संस्करण 1984 पृ 43
4.सुशांत सुप्रिय, इस रूट की सभी लाइनें व्यस्त हैं, अंतिका प्रकाशन गाजियाबाद, पहला संस्करण 2015, पृ 14
5.वही, पृ 42
6.वही, पृ 41
7.वही, पृ 42
8.वही, पृ 41
9.वही, पृ 43
10.वही, पृ 43
11.वही, पृ 14
12.वही, पृ 10
13.वही, पृ 14
14.वही, पृ 42
15.वही, पृ 43